

# पाठ्य सामग्री

## Geography B.A. Part-II, (Hon's)

### Paper - III

### Unit - I

#### 386 ③-b Structure of Peninsular India

प्रायः द्वीपीय भारत 8 सहस्रज और गंगा के दक्षिण में फैले हुए इस प्रखण्ड का भाग है जो चीन और सुदूर से सिरा हुआ है। यह 1700 Km (अर्थात् यह गुजरात से पश्चिम केरल तक तथा (भाग) 1400 Km तक चौड़ा है। कच्छ की खाड़ी से अरावली के पश्चिम में सीमा बनाने हुए, ऊपर में दिल्ली के पास प्रायः गंगा के मैदान के सामानान्तर प्रखण्ड में राजमहल की पहाड़ियों तक इसका विस्तार है। शिलांग का पठार भी प्रायः द्वीपीय भारत का ही एक भाग है। राजमहल पहाड़ियों और शिलांग के पठार के मध्य प्रायः द्वीपीय शैलों पर कच्छ की मिट्टी का आवरण है। यही cut line यह प्रायः द्वीपीय भारत से शिलांग पठार और अलग अलग है पठार और कच्छ शैलों का विस्तार पश्चिम में आती हुई है। यह प्रखण्ड का प्राचीनतम प्रखण्ड है, जिसका निर्माण प्रायः Gondwanan Land से सम्बन्धित है। इस प्रखण्ड का प्रारम्भ भूगर्भ के Geological History का आधार है। यहाँ भाग आती है। बलुई संसार की प्राचीनतम शैलों का भी भाग है, जिसमें gneiss एवं Granite शैलों की प्रधानता है। इसका प्रायः द्वीपीय भाग के प्रायः से दक्षिण क्षेत्रों पर फैला हुआ है। इन पहिले शैलों का सम्बन्ध Cambrian period के पूर्व Algonian, Cambrian, Hononian, Lewisian युग से है। इन चट्टानों से उप Windy एवं Gondwana युग की शैलों का भी भाग है, जिसका निर्माण Cambrian से Jurassic युग के बीच माना जाता है। ये शैलों अपेक्षाकृत नवीन हैं लेकिन weathering and Denudation के कारण परिवर्तित हुआ है। ये शैलों अब व्याप्तिक रूप में नहीं पाये जाते। इस प्रदेश की प्रथम में पहिले Cretaceous Period तथा Pre-Tertiary Period में होने वाली ज्वालामुखी विस्फोट का आभास प्राप्त है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रायः द्वीपीय स्थलाकृति का निर्माण उपर्युक्त आणविक प्रवाह पर्वतीय जाल, शैल रचना, गण, थार का खण्डित है। अतः प्रायः द्वीपीय भारत का संरचना की दृष्टि से निम्न भागों में बाटा सकते हैं।

#### 1/ Archean group :- प्रखण्ड और परिवर्तित गुणों की बनी हुई है। इस समूह का विस्तार प्रायः दोप के दक्षिण पूर्व में अर्थात् 30° 30' में उत्तर मध्य प्रदेश एवं झारखण्ड में मिलता है।

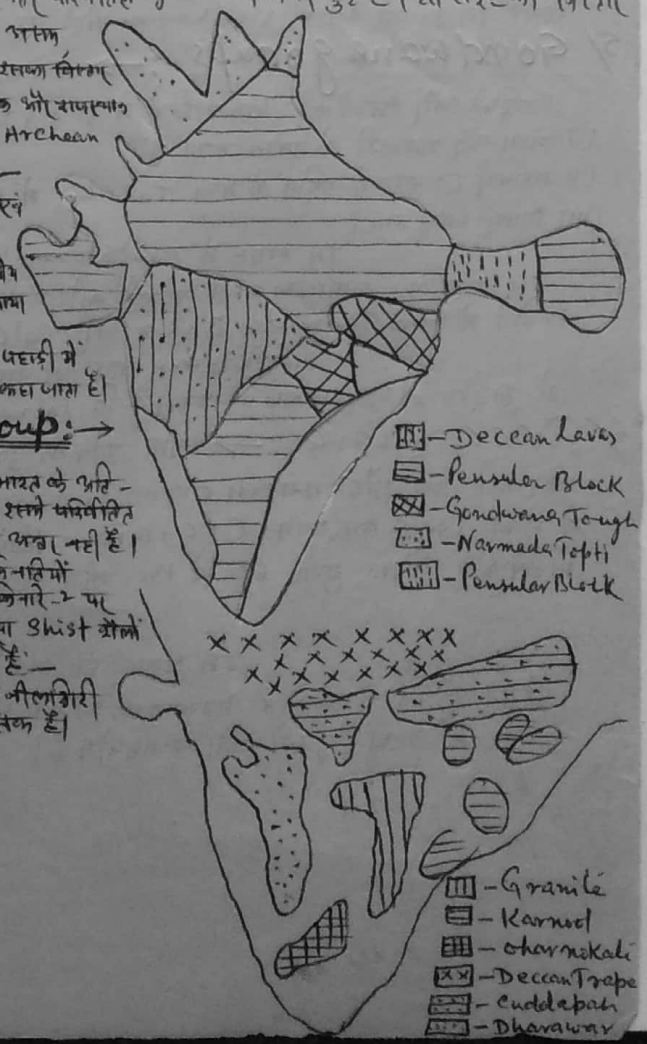
उत्तर मध्य प्रदेश एवं झारखण्ड में मिलता है। उत्तर मध्य प्रदेश में कनेल खण्ड तक है। 30° 30' में अरावली तक और राजस्थान के प्रदेश में यह पहाड़ तक बिखड़ी हुई पायी जाती है। Archean group को निम्न लिखित भागों में बाटा गया है।

- (a) Bengal gneiss :- बंगाल, बिहार, अर्थात् एवं अन्यत्र राज्य में देखे जाते हैं।
- (b) Bundel Khand gneiss :- इसका प्रायः प्रायः द्वीपीय भारत के उत्तरी भाग में Bundel Khand प्रदेश में पाया जाता है।
- (c) Nilgiri gneiss :- इसका विस्तार नीलगिरी पहाड़ी में पाया जाता है। इसे Charakili Series भी कहा जाता है।

#### 2/ Dharwar & Aravali group :-

Dr. D.N. Wadia के अनुसार भारत के प्रायः द्वीपीय शैलों को Dharwar नाम दिया गया है। इनके सम्बन्धित तलछटीय Archean Age की चट्टानों में कोई पत्थर नहीं है। इसका एक विशेषता यह है कि यह संकरी अभिनति में (Geosync line) में Archean gneiss के किनारे पर पायी जाती है। इस प्रकार इसका सम्बन्ध गुणों तथा Shist शैलों से पश्चिम है। यह निम्नलिखित क्षेत्रों में पायी जाती है।

- (a) मैसूर (धारवाह) बिकारी क्षेत्र :- इसका विस्तार नीलगिरी और मद्रास होते हुए कर्णाटक तक है।
- (b) धोला गंगा पठार के उत्तरी किनारे पर
- (c) पश्चिम की ओर मध्य प्रदेश के पास
- (d) नीलगिरी पहाड़ियों में।





3/ Cuddapah : → धारावाहिक निर्माण काल के अंतिम भाग में पृथ्वी पर अनेक Earth - movement हुए और इनके परिणाम स्वरूप ही अरावली के समान किन्तु अधिक उंची पर्वत श्रेणी का निर्माण हुआ और अपडेशन बहुत प्रारम्भ हुए। इसमें काफी समय बाद सैलोन का निक्षेप आरम्भ हुआ। यह निक्षेप धारावाहिक प्रेशर में ही कटाव एवं मोड़ द्वारा बनी हुई अफिनिटियों में हुआ था। इसी निक्षेप के परिणाम स्वरूप बने ज्वाल को Cuddapah System के नाम से पुकारा जाता है।

इस सभ्रह का निक्षेप सम्भवतः बहुत ही विशाल ग्र सन्नतियों में आरम्भ हुआ। यह निक्षेप Quartzite और lime stone के रूप में 20,000 मीटर की गहराई तक मिलता है। Cuddapah System से मिलजुल भूखण्ड हैं। इस सभ्रह की विशाल घड़ी प्रायद्वीप के पूर्वी भाग के पूरुजा एवं पेंनार नदियों के मध्य तथा महानदी के भागों में पाया जाता है। अन्नामलाई एवं जेनिकोम्बा पहाड़ियों के समान पर Cuddapah System अरि के जेपीया है। अरावली के निक्षेप Delhi Quartzite इसी सभ्रह का एक अंग पाया जाता है।

4/ Vindhyan System : → यह सभ्रह भी प्रायः द्वितीय भारत के कई स्थानों पर पाया जाता है। →

- (i) कारागीर पेंनार धारी के निचले भाग में Cuddapah को स्तरों द्वारा स्तरा किताब है।
- (ii) प्रायः द्वीप के उत्तरी भाग में Cuddapah को चम्बल से लोक प्रथ में सोन तक विस्तृत है।
- (iii) Aravali के परिणाम में विन्धयन निर्माण के अंतिम काल के लावा द्वारा निर्मित शैलों के रूप जोधपुर के आस-पास।

अतः इस सभ्रह में lime stone की प्रचुरता है। अरावली के परिणाम में स्थित इस रूपा को छोड़कर Vindhyan शैलें बहुत परिवर्तित हुई हैं।

5/ Gondwana groups : → इस सभ्रह के शैल के निर्माण गहरे जेसिनो नदी की धारियों और घिरो की अफिनिटियों में हुई है। इसकी उपस्थिति : →

- (i) जोंगा और गोदावरी के निचले भागों में
- (ii) महानदी एवं ब्राह्मणी नदियों के मध्य Talchir में Nerbada और Some नदी के शीप भागों तक
- (iii) शम्भूरा धारी तक।

इस सभ्रह में Mudstone, Sand Stone और Saily Stone मिलते हैं। इस सभ्रह का सर्वाधिक मध्य जोधली की परतों के कारण ही है। भारत का 90% कोयला इन्हीं धारियों में जिनमें Damodar Basin और Talchir Region प्रमुख हैं।

Gondwana सभ्रह की समानता अफ्रिका, आस्ट्रेलिया और दक्षिणी अमेरिका में दृश्य है। यह इस बात का प्रमाण है कि Gondwana के ही भाग अन्य कितनी समय मिले हुए हैं।

6/ Daccan lava : → प्रायः द्वीप के उत्तरी पश्चिमी भाग में Basalt lava इस पहा की अति ग्रीड भूसंरचना लगभग 100000 वर्ग K.m क्षेत्र में फैले हुए हैं। दरारों से होकर Lava का प्रवाह Cretaceous Period का के अंतिम समय में हुआ था। लावा निक्षेप की औसत गूढ़ 600 से 1500 मीटर के बीच पशुय जाती है।

इस प्रजाति एक बात है कि युगान् विज्ञान के अंतर्गत अद्यतन के दौरान प्रायः द्वितीय भारत का एक अत्यन्त उदाहरण के रूप में आया है, जो सदा सराहनीय है।